IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मारवाड़ में मानसिंह का अपने सामंतों के साथ संबंध

. मंजू वर्मा
सह आचार्य इतिहास
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय सीकर –332001

सारांशः– मारवाड़ में 1791–1793 में महाराजा विजय सिंह ने पहले शेर सिंह को और बाद में मानसिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। परंतु अप्रैल 1792 में सामंतो से विवश होकर विजय सिंह ने भीम सिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। जुलाई 1793 में विजय सिंह की मृत्यु के बाद भीम सिंह गद्दी पर अधिकांश सामंतों के सहयोग से बैठा। भीम सिंह के प्रतिद्वंदी मानसिंह और उसके समर्थक सामंतों ने राज्य में अराजकता फैलाना तथा लूटमार करना आरंभ कर दिया। 19 अक्टूबर 1803 को भीम सिंह की मृत्यु के बाद राज्य के सामंतों ने मानसिंह को गद्दी पर बैठा दिया। वस्तुतः मानसिंह ने पोकरण के सवाई सिंह के प्रबल विरोध के उपरांत सिंहासन प्राप्त किया था। सिंहासनारूढ़ होने के बाद मान सिंह ने भीम सिंह समर्थक सामंतो से प्रतिशोध लेने की नीति अपनाई। मान सिंह ने अपनी नीति से सामंतों और मुत्सद्दी अधिकारियों के एक बड़े वर्ग को अपने विरुद्ध कर लिया। अंत में मान सिंह ने सवाई सिंह को समाप्त करने के लिए अमीर खां पिंडारी से एक गुप्त समझौता किया। फलस्वरूप अमीर खां ने धोखे से सवाई सिंह को मय बहुत से साथियों के मार डाला। उसके मरने के बाद मानसिंह विरोधी गुट का स्वतः ही विघटन हो गया।

मारवाड़ में 1791–1793 में गुलाब राय पासवान के कारण महाराजा विजय सिंह ने राज्य में अव्यवस्था पैदा कर दी। उसने पहले शेर सिंह को और बाद में मानसिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।(1) परंतु सामंतो ने अप्रैल 1792 में विजय सिंह के जीवित रहते हुए भीम सिंह को महाराजा की गद्दी पर बैठा दिया। विवश होकर विजय सिंह ने भीम सिंह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। जुलाई 1793 में विजय सिंह की मृत्यु के बाद भीम सिंह गद्दी पर अधिकांश सामंतों के सहयोग से बैठा।(2) भीम सिंह के समक्ष सबसे कठिन समस्या मानसिंह की प्रतिद्वंदिता से उत्पन्न हुई। मानसिंह और उसके समर्थक सामंतों ने जालौर को अपना मुख्यालय बनाया और राज्य में अराजकता फैलाना तथा लूटमार करना आरंभ कर दिया। कुछ समय बाद भीम सिंह ने मानसिंह के प्रमुख केंद्र जालौर का घेरा आरंभ कर दिया जो 1803 तक चलता रहा। जालोर दुर्ग का घेरा असफल रहा और इसी बीच भीम सिंह 19 अक्टूबर 1803 को मर गया। राज्य के सामंतों ने मानसिंह को गद्दी पर बैठा दिया। पोकरण के सवाई सिंह ने मानसिंह के जोधपुर आने के पूर्व भीम सिंह की गर्भवती रानी को चौपासनी भेज दिया और उसकी सुरक्षा के लिए अपने सैनिक दस्ते नियुक्त कर दिए। वस्तुतः मानसिंह ने सवाई सिंह के प्रबल विरोध के उपरांत सिंहासन प्राप्त किया था। अतः दोनों में अंतःकरण से समझौता होना असंभव था।(3)

सिंहासनारूढ़ होने के बाद मान सिंह ने भीम सिंह समर्थक सामंतो से प्रतिशोध लेने की नीति अपनाई। कुछ दिनों बाद ही भीम सिंह का एक पुत्र मृत्यु उपरांत पैदा हुआ जिसका नाम धोकल सिंह रखा गया। प्रतिद्वंदी के जन्म लेने से मानसिंह और अधिक क्रोधित हुआ और बदले की भावना से अधिक प्रेरित हुआ क्योंकि भीमसिंह समर्थक सामंतो ने नवजात धोकल सिंह को खेतड़ी भिजवाने के बाद मानसिंह से सिंहासन त्यागने को कहा। इस समस्या ने मारवाड़ के सामंतों को दो हिस्सों में विभाजित कर दिया। मानसिंह विरोधी सामंतों का नेतृत्व पोकरण का सवाई सिंह कर रहा था। मान सिंह ने अपनी नीति से सामंतों और मुत्सद्दी अधिकारियों के

एक बड़े वर्ग को अपने विरुद्ध कर लिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि 1793 –1804 के मध्य मारवाड़ में जो अराजकता और अव्यवस्था फैली उसका कारण सामंती प्रतिस्पर्धा ही था ।(4)

सवाई सिंह की प्रतिशोधात्मक प्रकृति ने मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी के विवाह के सवाल को जोधपुर, जयपुर, और उदयपुर तीनों राज्यों के मध्य संघर्ष का विषय बना दिया जिसके परिणाम स्वरूप अमीर खां पिंडारी को महत्वपूर्ण भूमिका निभाने तथा तीनों राज्यों का आर्थिक शोषण करने का अवसर मिल गया। अंत में मान सिंह ने सवाई सिंह को समाप्त करने के लिए अमीर खां से एक गुप्त समझौता किया।(5) फलस्वरूप अमीर खां ने धोखे से सवाई सिंह को मय बहुत से साथियों के मार डाला।(6) उसके मरने के बाद मानसिंह विरोधी गुट का स्वतः ही विघटन हो गया। मारवाड़ में महाराजा मानसिंह के विरुद्ध जो तूफान उठा था, वह अब शांत हो चुका था।

परंतु मारवाड़ के भाग्य में शांति नहीं लिखी थी। सामंती प्रतिस्पर्धा ने अमीर खां को पुनः अवसर प्रदान किया अमीर खां और उसने मानसिंह के विश्वस्त दीवान इंद्रराज सिंघवी और गुरु देवनाथ को मौत के घाट उतार दिया। यह काम उसने मानसिंह विरोधी सामंतों से धन लेकर किया था।(7) इस घटना से मानसिंह काफी डर गया और वह राज कार्य से विरत रहने लगा। इस पर उसके विरोधी सामंतों ने उसकी रानी तथा पुत्र छतर सिंह के साथ मिलकर षड्यंत्र रचा और शासन सत्ता छत्तर सिंह को सौंपने के लिए विवश किया।(8)

सन्दर्भ सूचीः–

1. कर्नल टॉड–एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 2 पृ. 11
   (मानसिंह महाराणा विजय सिंह के पुत्र गुमान सिंह का लड़का था भीम सिंह भी महाराजा का पौत्र था।)
2. पद्मजा शर्मा–जोधपुर के महाराजा मानसिंह और उनका काल, पृ. 7
3. रेऊ–मारवाड़ राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ. 404
4. एम. एस. जैन आधुनिक राजस्थान का इतिहास, पृ. 36
5. डॉ. आर. पी. व्यास राजस्थान का वृहत इतिहास, खंड–1 पृ. 255
6. कर्नल टॉड–एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 2 पृ. 114
7. ओझा – जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ. 819
8. डॉ. आर. पी. व्यास – रोल ऑफ नोबिलिटी इन मारवाड़, पृष्ठ 51